ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 130-131**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

समकालीन कला में मधुबनी चित्रकार संतोष कुमार दास का योगदान

डॉ0 देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी ओम गायत्री नगर, चांदपुर सलोरी, प्रयागराज (उ0प्र0) भारत

Received-08.11.2023, Revised-14.11.2023, Accepted-20.11.2023 E-mail: ishwarartaligarh@gmail.com

***सारांशः** भारत विविधताओं का देश है। जहाँ सभी जाति धर्म संस्कृतियों का समन्वय दिखाई देता है। इस समन्वय में अनेक प्रकार की लोक कलाएं हमारे संस्कृति की परिचायक हैं, जिन्हे देख कर अनेकता में एकता का भाव दृष्टिगोचर होता है। हमारे पूर्वजों ने लोक संस्कृति व परम्पराओं को संजोया है, जो समकालीन समय में विभिन्न अवसरों पर देखी जा सकता हैं। उन्ही में मधुबनी की लोक चित्रकला अपने सौन्दर्य और समकालीन दृष्टिकोण के साथ परिलक्षित होती है जहाँ सामान्यतः पारंपरिक महिला कलाकारों का एकाधिकार रहा है। संतोष कुमार दास नें इस मिथकों को तोडतें हुए एक नयी भाषा रची, उन्होंने पारंपरिक प्रतिपादन के मापदडों को ध्यान में रखकर समकालीन कला में अपना अलग स्वरूप प्रस्तुत कर युवा पीढ़ी को आदर्श रूप में दिशा दिखायी है ।*

कुंजीभूत शब्द– **समकालीन कला, लोक कलाएं, भारतीय संस्कृति, संतोष कुमार दास, धर्म संस्कृतियों, परिचायक, परम्पराओं।**

भारतीय संस्कृति के निर्माण में धर्म प्रधान रहा है। मनुष्य धर्म का पालन करना अपना परम कर्तव्य मानता है। लोक कलाएं लोक जीवन में धर्म की नींव पर टिकी हैं, धर्म लोक कलाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। भारत की लोक कलाएँ हमारी संस्कृति का परिचायक हैं, जिन्हे देखकर विविधता में एकता के भाव परिलक्षित होते हैं, जो आज भी विभिन्न तीज–त्यौहारों, उत्सवों, पूजा पाठ, विवाह में देखने मिलते हैं।

भारत की विभिन्न लोक चित्र शैलियों का अवलोकन करने से हमे यह ज्ञात होता है कि इन लोक कलाओं को मातृ शक्तियों ने जीवित रखा है, समकालीन समय में पुरूषों ने भी इस कला को संजो कर रखा है। उन्ही में एक है, मधुबनी की लोक चित्र शैली जो बिहार राज्य के एक छोटे से गॉव से निकलकर सम्पूर्ण विश्व में अपना परचम लहरा रही है। मधुबनी लोक चित्रकला परम्परा जनजीवन में इस तरह घुल–मिल गयी है कि यहॉ के रीति–रिवाज व धर्म एक जैसा प्रतीत होता है।

बिहार मधुबनी (मिथिला) प्राचीन समय से ही कला–संस्कृति का केन्द्र रहा है। राजा जनक की राजधानी मिथिला थी, जिसका प्रमाण हमे रामायण में उल्लेख मिलता है कि राजा जनक की पुत्री सीता के स्वयंवर के समय सम्पूर्ण मिथिला को सजाने के लिए महिला कलाकारों से चित्र बनवाये गए थे। राजा जनक ने इस अनूठी कला से पूरे राज्य को सजाने के लिए बडी संख्या में कलाकारों का चयन किया था।[1]

इन लोक चित्रों में भिन्न प्रकार के लोक प्रतीकों के अंकन के साथ धार्मिक प्रतीकों का अंकन दिखाई देता है, जिनमें मछली, कछुआ, सांप, मोर, कमल का पुष्प, हंस, कृष्णलीला आदि का सुन्दर अंकन आज भी भित्तियों पर देखने को मिलते है।

आज यह भित्तियों से उतरकर कागज, कैनवास, लकडी, सिरैमिक आदि पर विविध रूप में अंकन हो रहे हैं। प्राकृतिक रंगों के साथ–साथ आधुनिक रंगों व तकनीकों का प्रयोग कर समकालीन अनेकों कलाकार अपनी अलग पहचान बना रहे हैं। उन्ही में से एक है, संतोष कुमार दास जी।

बिहार के मिथिला क्षेत्र के प्रसिद्व समकालीन कलाकार ''संतोष कुमार दास'' हिन्दू पौराणिक कथाओं, इतिहास की घटनाओं एवं समाज की ज्वलंत समस्याओं से प्रेरणा लेते हुए अनेक सुन्दर चित्रों का अंकन कर मधुबनी शैली की तकनीक का उपयोग करते हुए, उन्होने एक नवीन समकालीन कला में आधार तैयार करते हुए स्थायी विषयों की ओर नई दिशा दिखायी है। एक छोटे से शहर से निकल कर उनके चित्रों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कला वीथिकाओं की शोभा बढ़ा रहे हैं।

सन्तोष कुमार दास उन दुलर्भ स्वदेशी कलाकारों में एक हैं, जिन्होंने बडौदा कला विद्यालय से औपचारिक कला शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात अपने गांव लौटने का निर्णय लिया और वहॉ रहकर अपनी कला साधना को जारी रखा। उन्होंने अपने चित्रों में नये प्रयोगो के साथ आधुनिक एवं नूतन पारम्परिक और समकालीन कला का समन्वय करके अपनी कला को मौलिक रूप में प्रस्तुत कर अलग पहचान बनायी। वे रोजमर्रा के जीवन से प्रेरित होकर धार्मिक प्रतीकात्मक और मिथकों को समाहित कर प्रस्तुत किया।

इनका जन्म 1962 में हुआ था 1990 में एम0एस0 विश्वविद्यालय बड़ौदा से ललित कला में स्नातक (बी0एफ0ए0) की

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

उपाधि प्राप्त करने के पश्चात अपने पैतृक गॉव (बिहार) लोटने पर मधुबनी चित्रकला की तकनीकी पक्ष को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने निब और स्याही का प्रयोग करके अपनी पारम्परिक शैली में चित्रांकन करना जारी रखा।

उन्होने पौराणिक कथाओं और लोक जीवन की विभिन्न समस्याओं व परम्पराओं से प्रेरणा लेते हुए नवीन चित्रों का निर्माण किया जो समकालीन प्रतीत होते हैं। उनके चित्रों में धार्मिकता का ओत–प्रोत दिखता है, जिनमें बहुमुखी छवियॉ जीवन और पारम्परिक वास्तविकता को पुनः प्रस्तुत करती हैं। यह पारम्परिक कला के प्रति सामूहिक प्रेम और समकालीन कला में अपनी पहचान बनाने में ओजपूर्ण चित्र है। संतोष दास जी के चित्रों में अदभुत दृश्य प्रदर्शन है, जिससे उनके चित्र बोलते हैं, वह खुद मानते हैं कि एक कलाकार के लिए असल दुनिया काली स्याही का बर्तन है, जिसमें जादू होने के साथ ही रूप भी शामिल हैं।

मनुष्य जो कुछ सोचना है, वैसा ही चित्र बनाता है यह सृष्टि के गुढ़ तत्वों का अपने अन्दर छिपाये बैठा है। दास जी कहते है कि कलाकार खुद ही स्याही के रहस्यों का निमार्ण है। स्याही से कलाकार अपनी स्वतन्त्र दूनिया का निमार्ण करता है। वह काले रंग को शक्ति स्वरूप मानते हैं।[2]

उनके चित्र रेखा प्रधान होने के साथ धार्मिकता के प्रभाव व आस–पास की दुनिया से प्रेरित हैं, जिनमें बहुमुखी छवियॉ पुनः जीवन्त और सामूहिक व पारम्परिक कला के प्रति प्रेम, स्नेह, लगन से पूर्ण दिखाई देती हैं। उन्होने मधुबनी कें अन्य कलाकारों के विपरीत भारतीय और पश्चिमी परम्पराओं का गहन अध्ययन वा प्रशिक्षण लिया है।

दास जी ने विभिन्न सतहों पर चित्रकारी कर लोक कला में निरन्तर परिवर्तन कर खुद को प्रशिक्षित किया। वह सोचते थे कि द्रोपदी का हाथ हासिल करने के लिए अर्जुन ने मछली की मूर्ति के बजाय मछली के प्रतिविम्ब पर तीर क्यो चलना पड़ा, धीरें–धीरें उन्हें महसूस हुआ, कि यह सब एकाग्रता और ध्यान के बारे में था, यह एक कलाकार के दो आवश्यक गुण होते हैं।[3] बचपन में अपनी मॉ से कहानियॉ सुना करते थे, जो उनके मन मस्तिष्क में इस तरह बैठ गया कि वैसा ही चित्र रचना करने का प्रयास जारी रखा और सफल भी हुए। उन्होने अपनी पसंद के रंग के प्रति गहरी प्रतिबद्धता महसूस की। वह कहते हैं "मैने दस साल तक हर चीज को काली रेखाओं में देखा, ब्लैक मेरे लिए खास जादू रखता है, यह एक ऐसा रंग होता है जो पहाड़ की तरह दृढ़ है।

वे कहते हैं कि काला रंग है जो हमेशा स्थिर होता है। अन्य रंगो के विपरीत एक दूसरे के साथ मिश्रित होते हैं। काले रंग में दृढता होने के कारण उसकी उपयोगिता अधिक है। अपनी ब्लैक कलर की अभित्यक्ति में वे अपना गुरू "गंगा देवी" को मानते हैं जिसके कारण चित्रकार स्वयं को मधुबनी शैली के करीब लाता है। उन्होंने बुद्व और योग पर एक चित्र श्रृंखला तैयार की वह आने वाले युवा कलाकारों के लिए प्रेरणा श्रोत हैं।

वे राष्ट्र के साथ–साथ अन्तर्राट्रीय स्तर पर अपनी कला के माध्यम से प्रशंसा बटोरते रहे। वे मिथिला कला के संस्थापक निदेशक और शिक्षक के रूप में 2003 से 2008 तक कार्यरत रहे। उन्होंने मधुबनी की लोक कला को एक नयी दिशा प्रदान की। आपनें 2005 में गुजरात दंगों पर आधारित 'द गुजरात' श्रृंखला का सृजन किया, जिससे उन्हे एक अलग पहचान मिली। उसके बाद आपने पीछे मुडकर नही देखा। आज देश–विदेश के प्रमुख कला संस्थानों में उन्हें व्याख्यान व सम्मानित करने के लिए आमन्त्रित किया जाता रहता है। 2016 में उन्हे ओजास आर्ट अवार्ड मिला, 2017 मे ताराबुक्स में उनकी आत्म कथा शैली की किताब 'ब्लैक' प्रकाशित की। 2019 में उनका भारत में पहला एकल शो आयोजित हुआ, जिसका शीर्षक रीराउटेड़ रियालिटीज था, जिसे कैथरीन मायर्म द्वारा क्यूरेट किया गया था।[4]

संतोष कुमार दास के पास अद्भुद रचना का दृश्य भंडार है। उनकी कथाएं रूढियो के अन्दर और बाहर चलती रहती है। उनके चित्रो की आंतरिक सन्तुलन बहुत ही सन्तुलित है। इसलिए समकालीन कला अपना अलग मुकाम हासिल कर समकालीन मध ुबनी चित्रकार की नवीन सोच का परिचायक है।

निष्कर्ष– समकालीन कला में मधुबनी चित्रकला अपने सौन्दर्य, तर्क और विश्व दृष्टिकोण के साथ पांरपरिक महिला कलाकारों का एक क्षेत्र रही है, जिन्होंने पीढ़ी–दर पीढ़ी कौशल और ज्ञान प्रदान किया है। संतोष कुमार दास ने इस स्त्री दृश्य भाषा को अपनाया और इसके मुहावरों के माध्यम से स्वंय की खोज की। उन्होंने पारंपरिक प्रतिवादन के मांनदडो के मौलिक रूप से अलग हुए बिना छवियों और कथा पैटर्न का एक भंडार बनाया, इन्होंने समकालीन रूप में अपने स्वयं के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. nttps:/kzon myml:blog spot.com-12/09-2017-sahtosh kumar das
2. संतोष कुमार दास –moy.com.translate.google
3. maya-in.k. translate.k. Google
4. nttps:/kzohny ml.k. blogspot.com
5. on.tiles.ward .press.com

*****